No. J/A

0587577

इन्टरमीडिएट परीक्षा, 2015

आई० ए० (I.A.)

28 पृष्ठों की उत्तरपुस्तिका

वीक्षक का हस्ताक्षर

केन्द्राधीक्षक का हस्ताक्षर एवं मुहर

[हाशिया (Margin) छोड़कर पन्नों के दोनों पृष्ठों पर लिखें]

रोल कोड (Roll Code)	क्रमांक (Roll No.)	पंजीयन संख्या (Registration No.) No.	वर्ष (Year)	विषय (Subject)	पत्र (Paper)	लिपि (Script)	तिथि (Date)
41006	30025	41006 - RA	0029-2013	HINDI ELF		DEVNAGRI ~~ROMAN~~	04/03/2015

लब्धांक (MARKS OBTAINED)

Question Number	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	TOTAL
Marks Obtained	11	05	06	04	03	02	05	05	04	05	50
Question Number	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	TOTAL
Marks Obtained	05	03	07	04	—						19
Question Number	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	TOTAL
Marks Obtained	—										
Question Number	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	TOTAL
Marks Obtained	—										
Grand Total	(In Words)	Sixty nine only								(In Figure)	69

परीक्षार्थी हेतु निर्देश

1. परीक्षार्थी ध्यान दें कि केवल एक ही उत्तर-पुस्तिका में पूरे प्रश्नों का उत्तर सीमित करना है। अतिरिक्त उत्तर-पुस्तिका नहीं दी जायेगी।
2. उत्तर लिखना शुरु करने के पहले प्रत्येक परीक्षार्थी के लिए अपनी उत्तर-पुस्तिका के आवरण पृष्ठ पर अपना रोल कोड, रोल नं., पंजीयन संख्या एवं वर्ष, विषय, पत्र, लिपि तथा तिथि लिखना अनिवार्य है। परन्तु परीक्षार्थी को अपना अथवा अपने कॉलेज का नाम कदापि नहीं लिखना है। परीक्षार्थियों को चेतावनी दी जाती है कि जिस उत्तर-पुस्तिका पर रोल कोड, क्रमांक और सूचीकरण संख्या स्पष्ट रुप से अंकित न होगी, उसे जाँची नहीं जायेगी।
3. यदि कोई परीक्षार्थी परीक्षा में दूसरे को सहायता करता या किसी प्रकार से अवैध सहायता लेने की चेष्टा करता हुआ अथवा परीक्षा में अनुचित लाभ उठाने के लिए किसी दूसरे अवैध उपाय का अवलम्बन करता हुआ पाया जायेगा तो उसे परीक्षा से निष्कासित कर दिया जायेगा। परीक्षा मे परीक्षार्थियो को परस्पर किसी प्रकार से विचार विनिमय का अधिकार न होगा। परिषद द्वारा दिये गए प्रवेश पत्र, उत्तर-पुस्तिका, प्रश्न-पत्र तथा नियमानुकूल निर्दिष्ट उपकरणों के अतिरिक्त परीक्षार्थियो को अपने साथ परीक्षा कक्ष मे मोबाईल, कैलकुलेटर, छाता, पुस्तक, किसी प्रकार का पत्र, पॉकेट बुक, नोट आदि या किसी भी प्रकार का कागज रखना वर्जित है, भले ही उसका सम्बन्ध उस समय की परीक्षा के विषय से हो या न हो। इसका उल्लंघन करने वाले परीक्षार्थियो को परीक्षा से निष्कासित कर दिया जायेगा।
4. लिखने का सम्पूर्ण काम उत्तर-पुस्तिका पर ही किया जाय और उसका कोई भी पृष्ठ फाड़ा न जाए। परीक्षा खत्म होने के बाद उत्तर-पुस्तिका वापस लौटा देना आवश्यक है। इस उत्तर-पुस्तिका के बदले दूसरी उत्तर-पुस्तिका नहीं दी जा सकती। जो लिखावट काटी हुई रहेगी उसकी जाँच नहीं होगी। उत्तर-पुस्तिका में यदि कोई फटा पृष्ठ मिले तो उसे निकाल नही देना चाहिए बल्कि वीक्षक को दिखाकर उसे मोड़ देना चाहिए।
5. प्रश्न-पत्र पर कोई उत्तर या कोई भी दूसरी बात लिखना वर्जित है।
6. प्रश्न-पत्र वितरण के बाद एक घंटे तक कोई भी परीक्षार्थी अपनी उत्तर-पुस्तिका वापस नहीं कर सकते है।

परीक्षक का पूर्ण हस्ताक्षर एवं मुहर
(Full Signature of Examiner with Seal)

प्रधान परीक्षक का पूर्ण हस्ताक्षर एवं मुहर
(Full Signature of Head Examiner with Seal)

नोट - प्रत्येक पृष्ठो मे अंकित दोनों हाशिया (Margin) के बीच में प्रश्नों का उत्तर लिखें।

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only

1 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़े तथा पूछे गये प्रश्नो के उत्तर दें:

(क). लेखक ने किसे मनुष्य जाति का सरताज कहा है?

→ लेखक ने योरप, अमेरिका, जापान आदि विकसित देशो को मनुष्य जाति का सरताज कहा है।

2½

(ख). हिन्दुस्तान के सत्यानाश का क्या कारण है?

→ हिन्दुस्तान के सत्यानाश का कारण है यह है कि यहाँ के लोग दूसरो पर निर्भर रहते है अपने कार्य को कर वाने के लिये लिये।

2½

(ग).

→ भारतीयो मे प्रभुत्व शक्ति को अवकाश न मिलने का तात्पर्य है हमारे अंदर छुपे शक्तियो से जो हमे प्रभु से मिली है और जिनका हम सही तरह से उपयोग नही कर पा रहे है।

2

(घ).

→ लेखक यहाँ कहता है कि हम भारतीय सफाई करना यहाँ के लोगो से जैसी खूबसूरती के साथ बन पड़ता है।

2

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

अर्थात ये है कि यहां के लोग दूसरो के भरोसे जीवन जिते है। दूसरो पर कार्य करने के लिए निर्भर रहते है।

(ड). → ~~आत्मनिर्भरता~~ हिन्दुस्तान के लोग।

(च). → स्वेदकाई, भरोसे

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़ें तथा प्रश्नों के उत्तर दें:

(क). → प्रस्तुत पद्यांश मे अपराध उन कार्य को कहा गया है जो समाज के अंत शांति और एकता को तोड़ते है।

(ख). → खून की नदी शांति और सद्भावना के नाम पर बहायी जाती है। यहाँ समाजिक सत्रुओ की बात कही जा रही हैं जो अपने लालच और स्वार्थ के लिए दूसरो का खून बहाते है या फिर उन राजनैतिक पार्टियाँ जो धर्म के नाम पर गंदा खेल खेलती ही है।

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

(ग)

→ हृदय की हाट लूटने का तात्पर्य है लोगो के सुख, शांति छिन जाने से है।

(घ)

→ पुण्य से पाप का जन्म होना मतलब जहाँ बच्चो के दिमाग मे दुश्मनी की भावना का उत्पन्न होना है।

(ङ)

→ प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने एक ऐसे समाज का चित्र खींचा है जहाँ धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, क्षेत्र के नाम पर लोगो को एक दूसरे के खिलाफ भड़काया जाता है। यहाँ सभ्यता और शांति बनाने के नाम पर लोगो के खून बहाये जाते है।

5

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

3.

(क) प्रधानमंत्री का स्वच्छ भारत मिशन

→ वर्ष 2014 मे जब भाजपा ने चुनाव जिता और उनकी सरकार केन्द्र मे बनी तो भारत के प्रधानमंत्री के रूप मे श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने शपथ लिया। उसके के उन होने कई नई योजनाओ की शुरुआत की उस मे से एक है प्रधानमंत्री का स्वच्छ भारत मिशन। जिसके तहत प्रधानमंत्री ने यह बिरा उठाया है वर्ष 2022 तक भारत को स्वच्छ भारत बनाना है। जिस मे उनका सहयोग उनकी पार्टी के सभी लोग के साथ-साथ पुरा भारत वर्ष भी उनके इस मिशन मे उनके साथ खड़ा हो गया और है भी। सभी ने इसकी तारीफ की कि पहली बार किसी प्रधानमंत्री ने ऐसा कोई बिरा उठाया है। प्रधानमंत्री जी का मानना है कि विश्व के अन्य के भाति हमारा देश भी स्वच्छ रहे ताकि बाहर देश से आने वाले इसकी तारीफ करे ना कि घृणा करें जैस अभी करते है। प्रधानमंत्री जी ने पुरे देशवासियो से यह निवेदन किया की वह लोग

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

कूड़ा - कचड़ा यहाँ - वहाँ या रास्ते पर न फेंका करें और न ही जहाँ - तहाँ पेशाब करें । अगर यह मिशन सफल हो गया तो हमारा देश भारत भी अन्य देशों की भाँति स्वच्छ और सुन्दर दिखेगा । इसके लिये जरूरी है कि हम देश वासी भी इसमे सहयोग करें और दूसरों को गंदगी ~~फैला~~ फैलाने से भी रोकें ।

(6)

4. सेवा मे

प्रधानाचार्य,
सी पी पब्लिक स्कूल,
देवघर ।

विषय :- अर्थशास्त्र विषय की पढ़ाई हेतु ।

महोदय,
मैं आपके के स्कूल का छात्र हूँ । और आपको यह सूचना देना चाहता हूँ कि हमारी कक्षा XII मे अर्थशास्त्र विषय कि पढ़ाई न होने के कारण पिछले परिक्षा में कई छात्र फेल होगये । जल्द से जल्द इसका उपाय खोजिए ।
आपके मदद के लिए हम बहुत आभारी रहेंगें ।

धन्यवाद
तिथि :- 25 अक्टूबर, 2014

(4)

आपका प्रिय,
अनुज कुमार

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

5. जनसंचार के विभिन्न माध्यमों पर प्रकाश डालें।

→ जनसंचार का अर्थ होता है सूचना को दूर-दूर तक सभी व्यक्ति या जनता तक पहुँचाने वाली माध्यम को जनसंचार के नाम से जाना जाता है।
जनसंचार के विभिन्न माध्यम से जैसे कि टी.वी, रेडियो, समाचार-पत्र, इंटरनेट, आदि।

टी.वी :- यह जनसंसार का ऐसा माध्यम बन गया है जिसके द्वारा एक स्थान की ~~खब~~ खबरें या जानकारी दूसरे स्थान की व्यक्ति को प्राप्त हो जाती है। टी.वी पर हम न्यूज देखते हैं। गाना सुनते हैं। फिल्म देखते हैं और अन्य बहुत से कार्य करते हैं। इस पर हम सुनने के साथ-साथ देख भी सकते हैं।

रेडियो :- रेडियो जनसंसार का माध्यम है। यह टी.वी से भी पहले से उपयोग में लाया जाता था। इसके माध्यम से हम केवल सूचना सुन सकते हैं।

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

समाचार-पत्र तो जनसंचार का भूत काल से चला आ रहा माध्यम है। समाचार पत्र विभिन्न भाषाओं मे छपते है। जिससे उसे अलग - अलग भाषा वाले व्यक्तिय या लोग आराम से पढ सकते है। और यह जनसंचार का सबसे सशक्त और अनोखा माध्यम है।

6. 'स्मार्ट सिटी' की परिकल्पना पर एक फीचर लिखें।

→ स्मार्ट सिटी एक ऐसा सिटी होता है जहाँ हर प्रकार की मनुष्य की जरूरत की वस्तु उसे मिल जाती है आराम सें स्मार्ट सिटी मे लम्बे - चौरे रास्ते होते है जो कि एक दम साफ सुथरे रहते है। सिटी मे किसी भी प्रकार की गंदगी नही होते। यह सिटी मानव की आधुनिकी का सबसे बड़ा उदाहरण है। जहां चारो ओर बड़े - बड़े और विशाल काय इमारते होती है। जहाँ स्मार्ट पार्क रहता है। स्मार्ट सिटी के लोगो का रहने का स्तर भी बहुत ऊंचा होता है। यहाँ सभी व्यक्ति खुद पर निर्भर होते है अपना काम करने के लिये ना की किसी अन्य व्यक्ति पर।

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

7. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या करें
जो है वह खड़ा है
बिना किसी स्तंभ के
जो नहीं है उसे थामे हैं
राख और रोशनी के ऊँचे ऊँचे स्तंभ ।

→ प्रस्तुत काव्य हमारी पाठ पुस्तक अंतरा भाग -2 से ली गयी है ।
यहाँ कवि अपने कविता के माध्यम से बनारस की विशेषताओं का और उसके गुणों का बखान करते है ।
कवि कहते है कि यह शहर प्राचीन सभ्यताओं का प्रतीक है और भले ही यह शहर औद्योगिकरण पर चल रहा है लेकिन यह शहर अभी भी धर्म और प्राचीन सभ्यताओं पर ही खड़ा है ।
कवि कहते है कि धर्म के स्तंभ इस शहर को बनाये रखे है जिसके कारण यहा के लोगो के मन अभी भी धार्मिक मनोविधि बनी हुई है । यहां गंगा का वरदान है जो यह स्नान करके सच्चे दिल से जो माँगता है उसे वह मिलता है ।

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें :

(क). 'यह दीप अकेला' के कवि ने दीप को स्नेह भरा, गर्व भरा एंव मदमाता क्यों कहा है ?

→ यह कविता हमारी पाठ पुस्तक अंतरा भाग - २ से ली गयी है। यहाँ यह दीप अकेला के कवि ने दीप को स्नेह भरा, गर्व भरा एंव मदमाता इसलिए कहा है क्योंकि कवि कहते है कि यह जो दीप है वह स्नेह भरा हुआ है अर्थात इसमे करुणा का सागर भरा हुआ है। यह दूसरो की मदद करने वाला व्यक्ति है जो दूसरे को दुःख नही देता है। कवि यह भी कहते है कि यह दीप गर्व भरा है अर्थात यह दीप गर्व से परिपुर है। यह हमेशा गर्व मे रहता है। कवि यह भी कहते है कि यह दीप मदमाता भी है अर्थात यह दीप अपने आप मे ही मस्त रहता है। यह दूसरो से मतलब नही रखता है। और ना ही किसी दूसरो के कार्य मे टांग अराता है। यह बस खुद से मतलब रखता है। इसलिए यह दीप अकेला है।

2/2

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

(ब) पठित कविता के संदर्भ मे स्पष्ट करे कि सत्य की पहचान कैसे होती है।

→ प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा भाग-२ से ली गयी है।
इस कविता मे कवि हमे सत्य के बारे मे बतलाते है और कहते है कि हम मनुष्य सत्य के पीछे जीत जितना भागते है सत्य हमसे उतना ही दूर भागता जाता है। हम अपना पुरा जीवन सत्य की खोज मे बिता देते है। कवि ने कहा है कि महाभारत मे जब युधिष्टिर विदुर से सत्य के बारे मे जानना चाहते है तो विदुर जंगल मे ~~भाग~~ भाग जाते है और युधिष्टिर के आवाज लगाने पर भी नही रुकते। बहुत प्रयास के बाद विदुर रुकते है और उनकी ओर देखते है और भी गायब हो जाते है। तात्पर्य यह है कि जीवन भर ऋषि-मुनी सत्य जानने के लिए घोड़ ~~e~~ तपस्या करते है फिर भी उन्हे जल्दी सत्य नही मिलता। अंतिम मे कवि कहते है कि हम सत्य को चारो ओर खोजते है जबकि सत्य तो हमारे अंदर हमारे हृदय मे रहता है। जब हम किसी के बारे मे अच्छे विचार रखते है तब सत्य हम मे उभार होता है। सत्य हमेशा अच्छाई का प्रतिक होता है हमसो।

5

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

9. निम्नलिखित काव्यांशो में से किन्ही दो का काव्य - सौन्दर्य स्पष्ट करें :

(ग) .

→ प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्‌ पुस्तक अंतरा भाग - २ से दी गयी है।
इस काव्य में कवि कहते हैं कि यहा ~~देख~~ देवसेना अपनी जीवन मे आए दुखो का बखान कर रही है। देवसेना कहती है कि मै अभी तक सपने मे थी यह किसने ~~मु~~ मुझे सपने से जगा दिया हो और मुझे यह अभास हुआ है कि मैंने अपना सारा जीवन ~~चंद्रगुप्त~~ को स्कंदगुप्त को पाने की चाह मे बीता दिया हैं।

2

(घ) .

→ प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्‌ ~~प्र~~ पुस्तक अंतरा भाग - २ से ली गयी है।
यहाँ कवि कहते है अपनी ~~[illegible]~~ बेटी का सौन्दर्य का वर्णन कर रहे है। वह कहते है कि विवाह के समय तुम्हारे होठे होठो पर जो मुसकान थी वह तुम्हारी तुम्हारे पति के बारे मे सोच कर थी। तुम्हारा सौलह - श्रृंगार तुम्हारे पति के लिये था। तुम उसकी यादो मे खोई हुई थी।

2

4

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या करो।

हरगोबिन ने देखी है अपनी आँखों से
द्रोपदी चीर-हरण-लीला! बनारसी
साड़ी को तीन टुकड़े करके बँटवारा
किया था, निर्दय भाइयों ने।

→ प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा भाग-2 से ली गयी है। यहा लेखक हरगोबिन के माध्यम से कहानी कहते है। हरगोबिन जो की एक संवदिया है। जिसका काम संदेश ले जाना और लाना था। हवेली के बड़े साहब के देहांत के बाद उनके छोटे भाईयो ने हर वस्तु का बँटवारा किया। घर का जमीन का, सोने-चाँदी का। बड़ी बहुरिया के पहने ~~के~~ जेवर को भी बराबर बँटवारा किया गया। हरगोबिन कहता है कि वह लोग इतने निर्दय थे कि उन्होंने बनारसी साड़ी एक के तीन टुकड़े कर दिया। अर्थात घर के ~~घेरे~~ घर एक वस्तु का बँटवारा किया गया। क्योंकि अब साहब के भाइयो ने तय किया था कि वह लोग शहर मे रहेगे इसलिए वह लोग यहाँ कुछ नही छोड़ना चाहते थे।

(5)

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

11. निम्नलिखित मे से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दें:

(क). बालक द्वारा ईनाम में लड्डू मांगने पर लेखक ने सुख की साँस क्यों भरी ?

→ इस कहानी मे लेखक कहता है कि एक आठ साल के बालक से भिन्न-भिन्न प्रकार के सवाल पुछे जा रहे है जो उसके उम्र से कही बड़े कक्षा के सवाल से लेकिन वह बालक रटे-रटाये स्वर मे सबका सही-सही जवाब दे जा रहा है और वहा लोग तालिया बजा रहे है। उसने सारे सवालो का सही उत्तर दिया तो लेखक ने अंतिम मे बालक से पुछा की तुम्हे ईनाम मे क्या चाहिए। इस सवाल को सुन कर हम आश्चर्य मे पर गये कि इसका उत्तर तो बालक को नही पता तो बालक ने उत्तर दिया लड्डू। यह सुन लेखक को थोड़ी राहत मिली कि इतने कठिन सवालो के उत्तर रटने पर भी कम से कम बालक का हृदय तो बालक वाला ही है इसलिए तो उसने ईनाम मे लड्डू मांगने। लेखक आज के माता-पिता को संदेश देना चाहते है कि हम अपने बच्चो को ज्यादा पढ़ाने

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

और अच्छी शिक्षा देने मे उनके बचपन को नजरअंदाज कर देते है। जिस्से बच्चे का सम्पुर्ण विकास नही हो पाता है।

(B) रोगी बालक के प्रति गांधीजी के व्यवहार को वर्णित करें।

→ जब एक बालक हद से ज्यादा ईख का रस पी लेता है और दर्द के मारे गांधीजी को पुकारता है और कहता है बापु। बापु को बुलाओ। इतने मे गांधीजी उधर से चले आते है और उसके पेट पर हाथ रखकर कहते है इतनी ईख पीने की क्या जरूरत है। चल अब जल्दी से कै कर दे। और उन्होने बालक के मुँह मे उंगली डाले के कै करवां दी और कहते हुए चले गये तु तो पागल से। इससे यह पता चलता है कि गांधीजी को लोगो से बहुत लगाव था और लोग भी उनहे बहुत चाहते थे। तभी तो दर्द मे बालक ने गांधीजी को अवाज लगाई और उनसे ही अपना इलाज करवाया। गांधीजी सभी के चहिते थे। जहां भी वे जाते थे लोगो से घिरे रहते थे। गांधीजी बहुत ही सहज और सरल व्यवहार वाले व्यक्ति थे।

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

12. निम्नलिखित मे से किन्ही तीन प्रश्नो के उत्तर दे :

(ख).

→ सूरदास के प्रति जगधर के मन मे ईर्ष्या-भाव इसलिए जागा उठा क्योंकि जब जगधर और उसकी पत्नी मे लड़ाई हुई थी तो जगधर की मार से बचने के लिए उसकी पत्नी सूरदास की कुटिया मे भाग गई। जहाँ सूरदास के हस्तक्षेप करने के कारण जगधर अपनी पत्नी को न मार सका। और उसकी पत्नी और सूरदास के बारे मे गाँव मे तरह-तरह के बाते बनने लगी। जिस के कारण जगधर की बहुत बदनामी हुई और उसी दिन उसने ठान लिया कि वह सूरदास सूरदास से बदला लेकर रहेगा और उसने सूरदास की पैसो की पोटरी देख ली और जब एक दिन सूरदास घर पर न था तो जगधर ने उसके जीवन भर के जमा किया पैसे चुरा लिये और उसकी झोपरी मे आग लगा दी। जब तक गाँव वाले आग बुझाने के लिये आए और कोई कुछ करता तब तक सूरदास की झोपरी जलकर राख बन चुकी थी।

2½

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

(क)

→ लेखक कहते है कि अब मालवा मनुष्य को औद्योगिकरन का सिकार हो गया है। यहाँ के जंगल, ~~काट~~ काटे जा चुके है। लोगो का जीवन उथल - पुथल हो गया है। अब मालवा के नदिया मे पहले के भांती पानी नही है जिसके कारण अब मालवा मे पहले जैसी बरसात नही होती यहाँ मनुष्य ने पर्यावरण मे कई बदलाव कर डाले है जिसके कारण बहुत कुछ बदल गया है और और बरसात भी पहले जैसी नही होती है।

(ख).

→ रूप सिंह जो कि कई वर्ष पहले अपने गाँव से भाग कर शहर चला गया था और अब वह एक पर्वतारोहण है और अपने मालिक के बेटे शेखर के साथ अपने गाँव लौटा है। जहाँ उसे पता चला कि माता - पिता मर चुके है और भूप दादा पहाड़ पर रहते है। जब उसके भूप दादा उसे और शेखर को पहाड़ पर ले जाते है तो एक पर्वतारोहण होने के बाद भी रूप सिंह अपने बड़े भाई भूप सिंह के सामने चढ़ने मे

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

फिसड्डी लगता है क्योंकि रूप सिंह भले ही एक पर्वतारोहक है लेकिन उसे पहाड़ो पर सहारे के साथ चढ़ने मे सक्षम है लेकिन भूप सिंह बिना सहारे के ही चढ़ता है और वह बचपन से ही यहाँ पर रहा है इसलिए उसे आदत है लेकिन रूप सिंह यहाँ नही रहा है इसलिए वह नही चढ़ पाता है या खड़ी चढ़ाई ।

7

14.

→ भूप दादा जो कि रूप सिंह का बड़ा भाई है । इसका सारा जीवन इन पहाड़ो मे ही बिता है । वह अपनी भूमी से बहुत प्रेम करता है और अपने माता - पिता के निधन के बाद वह पर्वत पर रहने के लिये चला जाता है । और अपनी सारी सुख - सुविधा वही पर रख लेता है । वह वही पर खेती करता है । गाय और बैल भी पाल के रखे है । घर भी बना रखा है । वह अपना जीवन बड़े ही कठिनाई और दिक्कत से जीता है । जब रूप सिंह उसे उसके साथ चलने को कहता है तो भूप सिंह कहता है कि वह यह सब छोड़ कर कही नही जाएगा। वह यही जन्म लिया है और यही

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

पर मृत्यु को भी प्राप्त करेगें।
यही उसकी कर्म - भूमी है। वह
यही पर रहेगें कमाएगा और खाएगा
लेकिन यहाँ से कही और
(4) नही जाएगा।

12.
→ कवि विद्यापति एक प्रसिद्ध कवि माने
जाते थे अपने समय के। उन्होंने
कई उत्तम रचनाये किये है जिनको
पढ़ कर मन को संतुष्टी मिलती
है। विद्यापति जी का सारा जीवन
लोगो के बारे मे जानने मे ही
खत्म हो गया वह बहुत ही
अच्छे और सच्चे कवि थे
(3) अपने समय के।

End

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

Do not write your name or any mark part of identification In any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.

Do not write your name or any mark part of identification in any part of your Answer Book. For Writing an answer. (Including Heading) Use Black / Blue Ink only.